

## पद १४९

(राग: मुलतानी - ताल: धुमाळी)

रामनाम जप साधू जबलग सांसा ॥ध्रु.॥ गाफिल में मत दिन  
गमावो । तब पछतावे जब जम डारे फांसा ॥१॥ तू कहता मेरा  
माल खजाना । साथ नहीं आवेगा रतिमासा ॥२॥ मानिक के मन  
सुन रे मुसाफिर । मंजिल चलना नहीं तेरा बासा ॥३॥